

मछली पालन हेतु बेहतरीन तलाब के प्रबंधन का तरीका

शुभम श्रीवास्तव*,
डॉ. डी. वी. सिंह**

*छात्र, **प्राध्यापक, कीट विज्ञान
सरदार वल्लभ भाई पटेल कृषि
एव प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय,
मेरठ, उत्तर प्रदेश

तालाब के जल क्षेत्र की इकाई:-1 हेक्टेयर (2.5 एकड़)

1. तालाब में मत्स्य बीज संचय से पहले प्रबंधन

प्रथम पहल-

- 1) तालाब से जलीय खर-पतवार की निकासी करा लें। खरपतवार निकासी का कार्य मजदूर की मदद से (या) जाल की मदद से (या) रासायनिक दवा की मदद से करें।
- 2) तालाब से अवांछित मछलियों की निकासी कर लें। अवांछित मछलियों की निकासी जाल चलाकर (या) तालाब सुखाकर (या) 2500 कि.ग्रा. प्रति हे. महुआ की खली का प्रयोग कर (या) 350 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से ब्लीचिंग पाउडर का प्रयोग से कर सकते हैं ब्लीचिंग पाउडर का प्रयोगशाम को (सूर्यास्त के बाद) करें।

अवांछित की डेम कोड़ों की निकासी कर लें। इसके लिए सर्फ व वनस्पति तेल की दर से साइपरमैथरीन (या) बायोपेस्टिसाइड का प्रयोग करें

दूसरा पहल-

- 1) चूने का प्रयोग 125 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से करें।
- 2) मवेशी के गोबर का प्रयोग की 5000 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर दर से करें।
- 3) सरसों (या) राई की खली का प्रयोग 250 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से करें।
- 4) यूरिया का प्रयोग 125 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से करें (पुराने तालाब में यूरिया ना दें)
- 5) सिंगल सुपर फास्फेट का प्रयोग 250 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से करें।
- 6) पोटाश का प्रयोग 50 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से करें
- 7) सूक्ष्म खनिज का मिश्रण का प्रयोग 2.5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से करें।

तीसरा पहल-

- 1) तालाब को 1 सप्ताह तक छोड़ दें।

चौथा पहल-

- 1) मत्स्य बीज संचय से 24 घंटा पूर्व तालाब में खाली जाल चला दें।

पांचवा पहल-

- 1) मत्स्य बीज संचय से 24 घंटा पूर्व तालाब में जाल चलाने के बाद एक किलोग्राम पर हेक्टेयर की दर से पोटेशियम परमैंगनेट का छिड़काव तालाब में करें।

2. मत्स्य बीज संचय के समय प्रबंधन संचय दर : 1000/ हे.

1. प्रजाति का चुनाव:-

रोहू, कतला, मृगल, ग्रासकार्प, कॉमनकार्प एवं सिल्वरकार्प।

2. प्रजाति का अनुपात:- उपलब्धता के अनुसार निम्न प्रकार से तय करें:-

1. कतला- 40%, रोहू-20%, मृगल-20%, कमान कार्प-20%
2. सिल्वर कार्प-40%, रोहू-20%, मृगल-30%, ग्रास कार्प-10%
3. कतला-60%, रोहू-20%, मृगल-10% कॉमन कार्प-10%
4. कतला-20%, सिल्वर कार्प-20%, रोहू-30%, ग्रास कार्प-10% एवं कॉमन कार्प-10%
5. सिल्वर कार्प-40%, ग्रास कार्प-20%, कॉमन कार्प-40%
(शीत कालीन फशल चक्र के लिए)

3. मत्स्य बीज ईयरलिंग (साल भर का बीज) का आकार

औसत लंबाई:- 250 - 300 मी. मी.

औसत वजन:- 50 ग्राम

4. बीज संचय का अनुकूल समय:-

सुबह 8 से 10 बजे ।

5. मत्स्य बीज संचय का महीना:-

फरवरी एवं जुलाई (5 महीने का दो फसल चक्र)

(1 फरवरी से 30 जून एवं 1 जुलाई से 30 नवंबर)

3. मत्स्य बीज संचय उपरांत प्रबंधन

प्रथम पहल:-

1. प्रतिमाह उर्वरक का प्रयोग करें । रासायनिक एवं जैविक उर्वरक के प्रयोग का अंतराल 15 दिन होना चाहिए। उर्वरक के प्रयोग से 2 दिन पूर्व 10-15 किलोग्राम/हेक्टेयर की दर से चुने का तालाब में घोल कर छिड़काव करें।
 - क) प्रत्येक माह के प्रथम तारीख को मवेशी का गोबर 1000 किलोग्राम पर हेक्टेयर की दर से घोल कर छिड़काव करें।
 - ख) प्रत्येक माह की 15 तारीख को रासायनिक खाद के रूप में सिंगल सुपरफास्फेट (या) डी. ए. पी. का प्रयोग 15 किलोग्राम की दर से घोल कर छिड़काव करें।
2. पानी में प्लैंकटन (प्लवक) की मात्रा बढ़ाने के लिए प्रतिमाह प्लैंकटन बढ़ाने वाली दवा का प्रयोग 2.5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से करें। या कार्बनिक मिश्रण तैयार कर भी प्रयोग किया जा सकता है।

दूसरा पहल: -आहार प्रबंधन

मत्स्य आहार तालिका (एफ सी आर 2:1)

(मत्स्य बीज संचय दर @10000 / हेक्टेयर, औसत वजन- 50 ग्राम, कुल वजन -500 किलोग्राम)

| क्र. स. | महीना | आहार दर | प्रतिदिन भोजन की मात्रा (किलोग्राम) | एक माह में कुल भोजन की मात्रा (किलोग्राम) | माह के अंत में संचित मछलियों की कुल वृद्धि (किलोग्राम) |
|---------|-------|---------|-------------------------------------|---|--|
| 1) | 1 | 5% | 25 किलोग्राम | 750 किलोग्राम | 875 किलोग्राम |
| 2) | 2 | 4% | 35 किलोग्राम | 1050 किलोग्राम | 1400 किलोग्राम |
| 3) | 3 | 4% | 56 किलोग्राम | 1680 किलोग्राम | 2240 किलोग्राम |
| 4) | 4 | 4% | 90 किलोग्राम | 0 किलोग्राम | 3590 किलोग्राम |
| 5) | 5 | 3% | 108 किलोग्राम | 3240 किलोग्राम | 5210 किलोग्राम |
| 6) | | | | 9420 किलोग्राम यानि 9000 किलोग्राम | 5210 किलोग्राम यानि 5000 किलोग्राम |

मछलियों के जल वृद्धि के लिए **खनिज मिश्रण** 10 ग्राम प्रति किलोग्राम मत्स्य आहार में मिलाकर मछलियों को खिलाएं। खनिज तत्व सही रूप से आहार में मिले इसके लिए बाइंडर का प्रयोग 30 मिलीलीटर प्रति किलोग्राम की दर से करें।

मछलियों के जल्द विधि के लिए प्रोबायोक्टिस का प्रयोग 5 से 10 ग्राम प्रति किलोग्राम आहार के साथ मिलाकर मछलियों को खिलाने में करें। प्रोबायोक्टिस सही रूप से आहार में मिले इसके लिए बाइंडर का प्रयोग 30 मिलीलीटर प्रति किलोग्राम आहार के दर से करें।

तीसरा पहल:-गर्मी के समय में महीने में एक बार एवं जाड़े के समय में दो बार जाल चलाएं।

चौथा पहल:-प्रोबायोक्टिस एवं अन्य दवा

1. जलीय प्रोबायोक्टिस का प्रयोग 400 ग्राम प्रति एकड़(या) एक किलोग्राम पर हेक्टेयर की दर से 30 लीटर पानी में घोल का छिड़काव करें।
2. मृदा का प्रयोग 400 ग्राम प्रति एकड़(या) 1 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से नमी युक्त बालू मिलाकर छिड़काव करें।
3. चूने का प्रयोग प्रति 15 दिन पर पी. एच. मान के अनुसार 10-15 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से करें।
4. पोटेशियम परमैंगनेट का प्रयोग 400 ग्राम प्रति एकड़ या 1 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से 45 दिन के अंतराल पर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

पांचवा पहल:-मछलियों की त्वरित वृद्धि के लिए रसायन का प्रयोग

1. विटामिन एवं खनिज के मिश्रण का प्रयोग 5 से 10 ग्राम प्रति किलोग्राम आहार में मिलाकर करें।
2. जिओलाइट का प्रयोग 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर प्रतिमाह की दर से करें।
3. खनिज का मिश्रण का प्रयोग 10 ग्राम किलोग्राम आहार के साथ (या) 2.5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से तालाब में घोलकर छिड़काव करें।

लागत एवं आमदनी का ब्योरा

तालाब का जल क्षेत्र= 1 हैक्टेयर (2.5 एकड़)

| क्र. स. | मद (आइटम) | परंपरागत तरीके से मत्स्यपालन/ खर्च (रुपए में) | वैज्ञानिक एवं बेहतर प्रबंधन से मत्स्यपालन/ खर्च (रुपए में) |
|---------|--|--|---|
| 1. | मत्स्यबीज | 50,000 | 50,000 |
| 2. | दवा | 10000 | 10,000 |
| 3. | उर्वरक | 10,000 | 10,000 |
| 4. | मजदूर | 20000 | 20,000 |
| 5. | प्रोबायोटिक्स | 0 | 10,000 |
| 6. | पूरक आहार | 0 | 1,98,000 |
| 7. | मछली निकासी पर खर्च (उत्पाद मूल्य का 10%) | 0 | 62,500 |
| 1) | कुल मछली का उत्पाद | 1500 किलोग्राम | 5,000 किलोग्राम |
| 2) | कुल खर्च | 96000 | 3,60,500 |
| 3) | बिक्री मूल्य | 150 प्रतिकिलो ग्राम | 150 प्रति किलोग्राम |
| 4) | कुल आमदनी | 225000 | 7,50,000 |
| 5) | शुद्ध आमदनी | 125000 | 3,89,500 |
| 6) | फसल अवधि | 10 महीना | 5 महीना फरवरी से जून एवं जुलाई से नवंबर |